पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छङअन

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छ्डङअन

खण्ड एक

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

पश्चिम की तीर्थयात्रा

ऊ छङअन

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

प्रथम संस्करण 2009

अनुवादक : मनमोहन ठाकौर
जानकी बल्लभ

हिन्दी सम्पादक : छन शिय्वे, ल्यू मिङचन
श्ये वाङफ़ान, छ्येन युङमिङ
ली चुङई, चाङ चुङछ्युन

ISBN 978-7-119-04786-7
© विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ, चीन, 2009

प्रकाशक : विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह
24 पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ 100037, चीन
http://www.flp.com.cn

चीन लोक गणराज्य में मुद्रित

लेखक के विषय में

मिङ राजवंश के उपन्यासकार ऊ छङअन (1500-82) जो रूचुङ और "शयाङ के पर्वत-पुरुष" के नाम से भी जाने जाते हैं, का जन्म शानयाङ (आजकल च्याङसू प्रांत का ह्वाएआन) में हुआ था। अपने बाल्यकाल से ही वे आधिदैविक कथाओं को बड़ी उत्कंठा से पढ़ा करते थे। शाही परीक्षाओं में बार-बार असफल हो जाने के बाद वे मध्य च्याचिङ काल (1522-66) में सर्वोच्च राज्य-विद्यालय के छात्र बन गए और इस काल के अंत में चच्याङ प्रांत की छाङशिङ काउंटी के प्रधान के सहायक के पद पर नियुक्त किए गए। वृद्धावस्था में अपने राजकीय पेशे से थक जाने पर उन्होंने इसे छोड़ दिया और लेखन कार्य में तल्लीन हो गए। किंवदंतियों और पूर्ववर्ती ग्रंथों को आधार बनाते हुए उन्होंने अपने चिरप्रतिष्ठित पौराणिक उपन्यास "पश्चिम की तीर्थयात्रा" की रचना की। उनकी कविताएं और निबंध तत्कालीन सामाजिक यथार्थ के प्रति उनकी नाराजगी की अभिव्यक्ति करते हैं। उनके दो ग्रंथ "पश्चिम की तीर्थयात्रा" तथा "श्री शयाङ की रचनाएं" अब भी विद्यमान हैं।

此为试读,需要完整PDF请访问: www.ertongbook.com

प्रकाशक की ओर से

सौ अध्यायों में लिखे गए प्रसिद्ध चीनी ग्रंथ "पश्चिम की तीर्थयात्रा" का एक संपूर्ण संस्करण पेइचिङ के "जन साहित्य-प्रकाशन गृह" द्वारा सन 1955 में प्रकाशित किया गया था। प्रस्तुत ग्रंथ उसी संस्करण का तीन खण्डों में किया गया हिन्दी अनुवाद है।

लोक कथाओं पर आधारित इस प्रसिद्ध पौराणिक उपन्यास "पश्चिम की तीर्थयात्रा" को वर्तमान रूप ऊ छङअन (1500-82) के द्वारा सन 1570 के आसपास दिया गया था।

पिछले चार सौ वर्षों में इस उपन्यास के अनेक भिन्न-भिन्न संस्करण प्रकाश में आए हैं। सन 1955 में प्रकाशित उक्त चीनी संस्करण, ज्ञात प्राचीनतम संस्करण – शितथाङ काष्ठ-ठप्पा संस्करण – पर आधारित है जो मिङ राजवंश (1368-1644) के सम्राट वानली के शासन के बीसवें वर्ष (1592) में नानचिङ में मुद्रित किया गया था। इसके अतिरिक्त छिङ राजवंश (1636-1911) में प्रकाशित छै विभिन्न संस्करणों से मिलान करके भी उसकी जांच और परिवर्द्धन कर लिया गया था।

चित्रों का चयन एक अश्ममुद्रणीय (लिथोग्राफिक) संस्करण ("पश्चिम की तीर्थयात्रा" के चित्रों का नया संस्करण) से किया गया है जो छिङ राजवंश के सम्राट क्वाङश्वी के शासन के चौदहवें वर्ष (1888) में प्रकाशित हुआ था।

प्रस्तुत "पश्चिम की तीर्थयात्रा" के हिन्दी संस्करण के लिए सुप्रसिद्ध चीनी संस्कृति के ग्रेट मास्टर, विद्या जगत के विभूतिमान विद्वान व पेइचिङ विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रोफेसर ची श्येनलिन ने प्रस्तावना लिखी है। उनकी इस सहृदय कृपा के लिए हम दिवंगत ची श्येनलिन को नतमस्तक होकर हार्दिक धन्यवाद देते हैं और उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इसके अतिरिक्त हम इस हिन्दी संस्करण के प्रकाशन में समर्थन व मदद देने वाले हमारे भूतपूर्व हिन्दी विशेषज्ञ जानकी बल्लभ और उन नामी-गिरामी चीनी बौद्ध आचार्यों का भी शुक्रिया अदा करते हैं जिनमें शीआन के वृहत् छिअन मठ के मठाधीश चङ छिन (Zeng Qin), हनान के शाओलिन मठ के मठाचार्य शि युङशिन (Shi Yongxin) और सुप्रसिद्ध धर्माचार्य येन चाङ (Yan Zang) शामिल हैं।

20वीं शताब्दी के नब्बे वाले दशक के शुरू में हमारे प्रकाशन-गृह के हिन्दी विभाग के तत्त्वावधान में "पश्चिम की तीर्थयात्रा" का हिन्दी में अनुवाद, जांच व अनुमोदन करके मुद्रण-संस्करण बनाया गया था। परन्तु हिन्दी विभाग के बन्द होने के कारण "पश्चिम की तीर्थयात्रा" का हिन्दी संस्करण ताक पर धरा रह गया। 21वीं सदी के प्रारंभ में पूर्व हिन्दी विभाग के श्रीं छन शिय्वे और सुश्री ल्यू मिङचन ने यह रिपोर्ट पेश की कि उन दोनों एवं चीन सचित्र प्रकाशन-गृह के श्री लिन फूची, चाइना रेडियो इंटरनेशनल के श्री छन लीशिङ

और श्री छन श्वेपिन आदि पांच वरिष्ठ अनुवादकों ने स्वतः धनराशि जुटाने और मुद्रण-संस्करण के हिन्दी अनुवाद की कमप्यूटर कापी तैयार करके पुनः जांच व शोध करने तथा प्रकाशित करने की इच्छा जताई है। यह चीन-भारत मैत्री को बढ़ाने के लिए हितकारी है, हमारे प्रकाशन-गृह ने स्वभाविक रूप से अनुमति देकर पूरा समर्थन किया है। उन्हीं की कोशिशों से "पश्चिम की तीर्थयात्रा" उपन्यास का हिन्दी संस्करण अब पाठकों के सामने प्रस्तुत है। उम्मीद है कि हमारे पाठकों को यह पसंद आएगा।

प्रस्तावना

"पश्चिम की तीर्थयात्रा" सुप्रसिद्ध प्राचीन चीनी उपन्यास है। वह न सिर्फ चीनी जनता की सांस्कृतिक निधि है, बल्कि सांस्कृतिक आदान-प्रदान के निरंतर विकास के साथ-साथ यह विदेशी मित्रों का मनपसंद उपन्यास भी बनता जा रहा है। वर्ष 1831 में ही इसका जापानी भाषा में अनुवाद हो गया था, उसके उपरांत ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका, पोलैंड, रूस, चेको, रूमानिया, कोरिया, वियतनाम आदि देशों में भी इसका अनुवाद हुआ। चीनी विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह द्वारा वर्षों के प्रयासों से इसका हिन्दी में अनुवाद किया गया है, जो अब आपके सामने प्रस्तुत है। यह एक बड़ी खुशी की बात है और बधाई के योग्य है।

"पश्चिम की तीर्थयात्रा" थाङ महाभिक्षु के बौद्ध सूत्रों को स्वदेश ले आने की कहानी पर आधारित एक पौराणिक उपन्यास है और बौद्धधर्म से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। "पश्चिम की तीर्थयात्रा" में भारत से संबद्ध बहुत कुछ विषय देखने को मिलते हैं, अनेक कथाएं भी भारत से लाई गई हैं, किन्तु वे मात्र अनुकृति नहीं हैं, कहानियों के वर्णन-लेखन में अपना स्वसृजन विद्यमान है। मेहनती एवं बुद्धिमान चीनी राष्ट्र सदैव दूसरों की खूबियों को ग्रहण करके उन्हें विकसित करने और स्वरचित रूप देने की कोशिश करता है। चीनी राष्ट्र का सांस्कृतिक इतिहास इसका साक्षी है।

चीन और भारत दोनों प्राचीनतम सांस्कृतिक सभ्यता वाले राष्ट्र हैं, दोनों देशों के बीच हजारों वर्ष पुरानी मित्रता मौजूद है। हमारी मित्रता मुख्यतः शान्ति, मैत्री एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर आधारित है। आज भी दोनों देशों की जनता एशिया एवं विश्व में दीर्घकालीन शान्ति एवं मानव जाति के सुनहरे भविष्य के लिए मिलकर प्रयत्न कर रही है। हमारे दोनों देशों की पुरातन मित्रता में नव यौवन का संचार हुआ है, जो दिनोंदिन फलता-फूलता जा रहा है। यह एक पुरातन वृक्ष के समान है, जिस पर अतीत में असंख्य सुन्दर व सुगन्धित पुष्प खिले थे तथा भविष्य में और अधिक सुन्दर एवं सुगन्धित पुष्प खिलेंगे।

विश्व इतिहास में जिस तरह चीन और भारत के बीच कम से कम दो हजार वर्षों का मैत्रीपूर्ण सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आवा-जाही का इतिहास रहा है, वह अन्यत्र अत्यन्त दुर्लभ है। ये दोनों प्राचीन देश आज भी जीवनशक्ति से भरपूर ओजस्विता के साथ आगे बढ़ रहे हैं, जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। अतः दोनों देशों की जनता अपनी इस प्रकार की मित्रता को बहुत मूल्यवान समझती है, उसे आगे विकसित करने के लिए संकल्पबद्ध है

और इस मित्रता का सूक्ष्म इतिहास जानने के लिए उत्सुक है, यह शतप्रतिशत समझ में आ सकता है।

हिन्दी में "पश्चिम की तीर्थयात्रा" का प्रकाशन चीनी और भारतीय जनता के बीच पारस्परिक समझ, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और चीन-भारत मैत्री के अनवरत विकास के लिए लाभदायक हो, यही मेरी कामना है।

季羡林

(ची श्येनलिन)

11 मई 2007

बुद्ध तथागत

थाङ सम्राट थाएचुङ

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com

थाङ भिक्षु (सानचाङ)

वानरराज (नवदीक्षित सुन ऊखुङ)

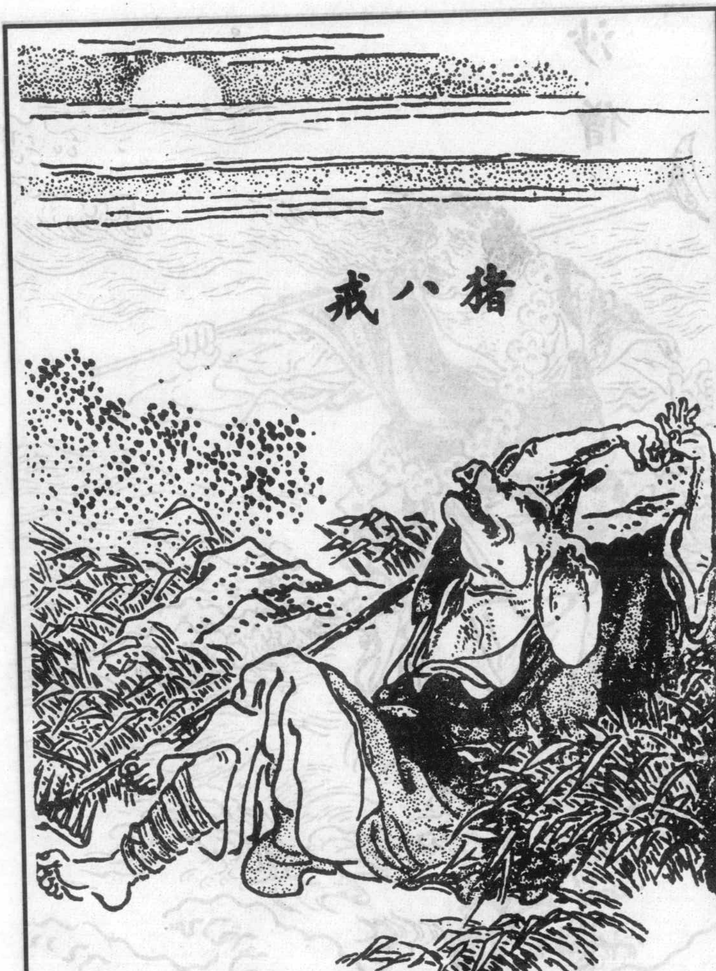

शूकरराज (चू पाच्ये)

भिक्षु रेतात्मा (शा ऊचिङ)

विषय-सूची

अध्याय-1
धारण करता जब दैवी मूल, आदि पुरुष
चारों ओर सृष्टि में वसन्त छा जाता है,
हृदय के स्वभाव को ज्यों-ज्यों परिष्कृत करें
मार्ग जो महान है, उदित हो जाता है। 1

अध्याय-2
चरम सत्य का बोध हो गया उसे जगत में,
दानव-वध कर आत्म-शक्ति का ज्ञान हो गया। 23

अध्याय-3
हार मान लेते हैं चारों समुद्र, और
पर्वत हज़ार सहज वश में हो जाते हैं,
नाम कट जाता है दसवें प्रवर्ग का
पंजिका से नरक नवम की, सदा के लिए। 41

अध्याय-4
अश्वरक्षक बन हुआ था कष्ट उसको,
"स्वर्ग-समकक्ष" पद दे नहीं पाया उसे सन्तोष। 58

अध्याय-5
ध्वंस करके आड़ुओं का बाग
चुरा लीं गुटिका अनेकों,
जब किया विद्रोह उसने स्वर्ग से
देवताओं ने किए बंदी अनेकों दुष्ट दानव। 77

अध्याय-6
भोज में जब क्वानइन आईं तो पूछा
क्यों हुआ यह काण्ड सारा ?
लघु मनीषी ने दिखाकर शक्ति अपनी
हरा डाला था महत्तर मनीषी को। 94

अध्याय-7
भागा था अष्ट त्रिभुज भट्ठी से मनीषी किन्तु
पंचतत्व पर्वत तले दबाया गया था मस्तिष्क-वानर को। 111

अध्याय-8
बुद्ध ने हमारे हैं रचे समस्त धर्मग्रन्थ,
प्रसारित किया है परम आनन्द जग में;
आज्ञा का पालन कर क्वानइन चलकर गईं
छाङआन, केवल एक निश्चित उद्देश्य से। 126
अध्याय-9
पद पर प्रतिष्ठित हो जाता छन क्वाङरुइ
पड़ता विपदाओं में,
भिक्षु नदी-धारा का, लेता है बदला अपने मां-बाप का। 145
अध्याय-10
मूर्खता-परिपूर्ण अपनी योजना से स्वयं ड्रैगनराज ने
भंग कर डाला नियम था स्वर्ग का,
नरक-अधिकारी निकट जा वेइ ने
एक लम्बा पत्र था प्रेषित किया। 160
अध्याय-11
दौरा कर निम्नतर जगत का
जीवित हो जाता फिर थाएचुङ,
देकर कूष्माण्ड उपहार में ल्यू छवेन
फिर से जारी रखता वैवाहिक जीवन को। 188
अध्याय-12
वचन का पालन कर थाङ सम्राट ने
अनुष्ठित किया था एक अनुपम महान यज्ञ,
स्वर्ण चिश्चिर के अवतार को स्वयं आकर
बोधिसत्व क्वानइन दर्शन दे जाती हैं। 210
अध्याय-13
जाकर गिर पड़ता वह व्याघ्र की मांद में
उसको बचा लेता है आकर नक्षत्र शुक्र,
ले जाकर द्विशाखित पर्वत के शीर्ष पर
आप्यायित कर देता पोछिन उस भिक्षु को। 239
अध्याय-14
सत्य पर पुनः लौट आता मेधा-वानर,
दस्यु छः हो जाते लुप्त निश्चिन्ह बन। 255
अध्याय-15
कुण्डली-सर्प-पर्वत पर देते हैं सहायता देव गुप्त रूप से,

此为试读，需要完整PDF请访问：www.ertongbook.com